B. A. PART – 1

हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य)

आधुनिक काल

शोभमग्न-3

प्रश्न :- आधुनिक काल (पद्य) की प्रवृत्तियों को बतायें ?

उत्तर :- शोभमाग :-

छायावादी युग

द्विवेदी युग की उपदेशात्मक एवं इतिवृत्तात्मक कविता की प्रतिक्रियास्वरूप छायावादी कविता का विकास हुआ। प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी वर्मा तथा डॉ० रामकुमार वर्मा इस काव्य-धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। हिन्दी की आधुनिक कविता में छायावादी कविता को सर्वश्रेष्ठ माना जा सकता है। यह काव्य आधुनिक युग का स्वर्ण-काव्य है। इस काव्य में वैयक्तिकता की प्रधानता है। प्रकृति-सौन्दर्य के चित्रण में प्रकृति के प्रति इन कवियों का आकर्षण और प्रेम व्यक्त होता है और कहीं-कहीं प्रकृति के भीतर विराट् को भी कवियों ने अनुभव किया है। इस कविता में शृंगार की प्रधानता है, परन्तु यह शृंगार रीतिकालीन शृंगार-भावना से भिन्न है। यह शृंगार स्थूल तथा मांसल न होकर सूक्ष्म एवं काल्पनिक है। छायावादी काव्य भाषा, अलंकृत तथा मुक्तछन्द विधान की दृष्टि से भी अनुपम है। 'कामायनी', 'पल्लव', 'परिमल' तथा 'यामा' छायावादी युग की प्रतिनिधि रचनाएँ हैं।

प्रगतिवादी युग

छायावादी कविता व्यष्टिमूलक कविता थी, इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप हिन्दी में प्रगतिवाद का प्रारम्भ हुआ। राजनीति के क्षेत्र में जो मार्क्सवाद है, साहित्य के क्षेत्र में उसे प्रगतिवाद की संज्ञा दी जाती है। मार्क्सवाद का लक्ष्य समाज में साम्यवादी व्यवस्था स्थापित करना है और अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए वह हिंसात्मक क्रान्ति को साधन के रूप में स्वीकार करता है। पन्त, निराला, दिनकर, नरेन्द्र शर्मा, नागार्जुन, नवीन, अंचल, मिलिन्द आदि कवियों ने अपनी कविताओं में शोषकों के प्रति घृणा, शोषितों के प्रति सहानुभूति,

सामाजिक समता के प्रति आग्रह, रूढ़ियों का विरोध, क्रान्ति की भावना की आवश्यकता पर बल देकर प्रगतिवादी साहित्य की रचना की है। प्रगतिवादी कविता आध्यात्मिक मूल्यों का निषेध करके भौतिक मूल्यों की स्थापना करती है। वस्तुतः इस कविता में वाद का अंश अधिक है, काव्य का कम। यह कविता प्रचारात्मक अधिक है, कवित्व की दृष्टि से इसका मूल्य अधिक नहीं।

(शेष बचा है)

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक - 11.02.2023
मो० नं०- 7909046087